वीतरागता हमारा आद-र्ः आचार्यश्री महाश्रमण

आमेट में अमृत महोत्सव के अन्तर्गत द-र्नाचार पर साप्ताहिक प्रवचन माला का दूसरा दिन, आचार्यश्री ने तीर्थंकर को बताया पुण्य की प्रकृति, जिज्ञासाओं का किया समाधान

आमेटः 18 जनवरी

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने वीतरागता को मनुश्य के लिए बडे आद-र्ा के रुप में परिभाशित करते हुए श्रावक-श्राविकाओं से आह्वान किया कि हमारे अर्हत वीतराग है। इनसे हमें जीवन उत्थान की प्रेरणा लेनी चाहिए। मनुश्य में वीतरागता का समावे-न है तो वह धर्म का संदे-न दे सकता है।

आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां अहिंसा समवसरण में अमृत महोत्सव के अन्तर्गत चल रहे द-र्नाचार के साप्ताहिक प्रवचन माला के दूसरे दिन आद-र्ा कौन विशय पर आयोजित कार्यक्रम में श्रावक समाज को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि केवली, अर्हत और सिद्ध में वीतरागता का प्रभाव देखने को मिलता है। इस दृश्टि से इसे आद-र्ा माना जा सकता है। जीवन में वीतरागता आए। इसके लिए आव-यक है कि व्यक्ति ग्यारहवें गुणस्थान में जाने की बजाय बारहवें गुणस्थान की तरफ बढने का प्रयास करें। ग्यारहवें गुणस्थान में जाने से हम बढते नहीं है, बल्कि नीचे गिर सकते है।

आचार्यश्री ने कहा कि आद-र्ा तो वही है जो अपने से कुछ ऊंचा हो। नीचा है उससे आद-र्ा की अपेक्षा नहीं की जा सकती। जहां पहंचना अभिश्ट है उसे आद-र्ा माना जा सकता है। देखती दुनियां में भी यही हमारे आद-र्ा है। अर्हत में भौतिकता और आध्यात्मिकता का समावे-न देखने को मिलता है। चक्रवती भी बडा आदमी होता है। उसमें भौतिक संपदा तो खूब होती है, लेकिन आध्यात्मिक दृश्टि से उसमें कमी रहती है। उन्होंने तीर्थंकर को पुण्य की प्रकृति के रुप में परिभाशित करते हुए कहा कि यह आध्यात्मिक चरित्र और धर्म पर व्याख्यान अथवा प्रवचन देते है। इसलिए तीर्थंकर को प्रवचनकार के रुप में स्वीकार किया गया है। सिद्धों की आत्मा को पूर्ण स्वस्थ बताते हुए उन्होंने कहा कि तीर्थंकर की आत्मा पूरी तरह से :ुद्ध नहीं होती। तीर्थंकर संसारी अवस्था के प्राणी और पूर्ण वीतरागता के पुरुश है। मनुश्य को भी प्रवचनकारी बनने का अधिकार प्राप्त करने की दि-ाा में प्रयास करना चाहिए। परम आद-र्ा की श्रेणी में सिद्ध को ही रखा जा सकता है। अर्हत को देव के रुप में भी स्वीकार किया गया है। यह हमारे आराध्य भी है। इसमें हमारा स्वार्थ नजर आता है। स्वार्थ की सिद्धी उसे ज्यादा महत्वपूर्ण बनाती है। साधु और गृहस्थ जीवन में भी इसका प्रभाव देखने को मिलता है। जो हमारे काम आता है उसके प्रति मन में स्वार्थ की भावना विकसित होती है।

अर्हत :ीर्श पर

आचार्यश्री ने कहा कि अर्हत हमें सिद्ध बनने का उपदे-ा और प्रवचन देने वाले होते है, जबकि यह सिद्धों से हमारा सीधा संपर्क नहीं होता। इसलिए अर्हत को नवकार महामंत्र में पहले स्थान पर रखा गया है और सिद्ध दूसरे स्थान पर। अर्हत को आद-र्ा देव के रुप में भी स्वीकार किया गया है। स्वर्ग में अनेकों देव है और मनुश्यकाल में कई देवों को मान्यता दी गई है। ऐसे में किसी भी देवता की अवहेलना और उनकी अवमानना करने से मनुश्य को बचने का प्रयास करना चाहिए। देव जगत भी हमारा ही एक अंग है। आस्था अपनी जगह होनी चाहिए। भगवती सूत्र में इस बात का उल्लेख मिलता है कि श्रावक के सामने किसी भी तरह के कश्ट आने पर इससे छुटकारा पाने के लिए वह लौकिक देवी-देवताओं की :ारण में नहीं जाता। श्रावक कभी भी वैि-श्ट कश्ट आ जाए तो भी सहायता की याचना न करें। जीवन में जितने पाप कर्म भोगना लिखा है उनका तो सामना करना ही है। अतिरिक्त पाप कर्म आने वाले नहीं है।

तीन तरह की होती है कामनाएं

:ांतिदूत ने कहा कि व्यक्ति में तीन तरह की कामनाएं होती है। पहली उत्तम कामना होती है जिसमें राग-द्वेश कम और कर्म के प्रति निर्जरा होती है। दुनियां का कल्याण और संघ की सेवा करने का ध्येय होता है। दूसरी मध्यम कामना होती है जिसमें गृहस्थ यह सोचता है कि मुझे वरदान मिल जाए और मैं जीत जाऊं। उन्होंने कहा कि अनेकों बार उनके पास चुनाव में जीत की कामना लेकर लोग आते है। हमें इस प्रपंच में नहीं पडना है। वैसे साधुओं और संतों को हमे-ाा इन विवादों से दूरी बनाकर ही रखनी चाहिए। हम उन लोगों को नैतिकता के पथ पर चलने की प्रेरणा दे सकते है। किसी को जिताने और हराने के पचडे में नहीं पडे। हम उन्हें वीतरागता और धर्म का संदे-ा दे सकते है। तीसरी अधम की कामना होती है जिसमें व्यक्ति अमुक का अनिश्ट करने की चेश्टा रखता है। किसी के प्रति वैमनस्यता बढाना अधम का प्रयास होता है।

दर्पण से दूरी रखें संत

आचार्यश्री ने साधु-साध्वियों से प्रायः पानी में स्वयं को देखने अथवा दर्पण में स्वयं को निहारने से दूरी बनाए रखने का आह्वान करते हुए कहा कि गृहस्थ में दर्पण देखने की प्रवृति देखी जा सकती है। मैं कैसा हूं। इसकी जानकारी कांच के माध्यम से मिल जाती है। स्वयं को देखा जा सके। वह आद-र्ा है। उन्होंने महापुरुशों की जीवनियों का अध्ययन करने की आव-यकता प्रतिपदित करते हुए कहा कि कई मर्तबा इनमें व्याख्यान की सामग्री भी मिल सकती है। इसे आद-र्ा के रुप में काम में लेने की प्रवृति विकसित की जानी चाहिए। हमें यह मनन करने की आव-यकता है कि मैं क्यूं नहीं

महापुरुशों की भांति बन सकता। वे भी मेरी तरह से ही इंसान थे। हम अपनी स्थिति का आकलन करें और अपनी स्थिति के अनुसार आद-र्ा बनने का प्रयास करें।

स्व अर्थ से बना स्वार्थ

आचार्यश्री ने संबंधित विशय पर प्रवचन देने के बाद साधु-साध्वियों और श्रावकों की जिज्ञासाओं को :ाांत करते हुए कहा कि स्व अर्थ से स्वार्थ :ाब्द बना है। अपना कल्याण करवाना इस श्रेणी में आता है। साधना कहीं भी रहकर की जा सकती है। महल, मंदिर, घर और :ाम-ाान कहीं भी। कुछ स्थान प्रसंग से जुडे होते है तो लोग वहां जाने का प्रयास करते है। कई लोग अपने घरों में ही इश्ट देवों को स्थापित करते है। समाधि स्थल पर जाने के प्रसंग भी सामने आते है। वहां जाने से विलुप्त होती स्मृतियां ताजा हो जाती है। इस अवसर पर मुनि रमे-ाकुमार ने श्री चरणों से चले श्री चरणों में पहुंच गए यह हमारा भूगोल है :ाीर्शक से गीत का संगान कर अपनी भावना को प्रकट किया। गुरुवार को प्रवचन माला कार्यक्रम के अन्तर्गत मार्ग द-र्ान कौन विशय पर प्रवचन होगा। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

गीत निर्माण और निबंध प्रतियोगिता के परिणाम घोशित

प्रवचन कार्यक्रम के दौरान मुनि जितेन्द्रकुमार ने साहित्य समिति की ओर से वै-ााख और भादवा माह में आचार्यश्री महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित हुई गीत निर्माण और निबंध प्रतियोगिता के परिणाम घोशित किए। निबंध प्रतियोगिता के सीनियर वर्ग मुनि में प्रथम मुनि राजेन्द्रकुमार, द्वितीय मुनि मदनकुमार, तृतीय मुनि ऋशभकुमार, जूनियर वर्ग मुनि में प्रथम मुनि विश्रुतकुमार, द्वितीय मुनि मृदुकुमार, तृतीय मुनि अनंतकुमार, साध्वी जूनियर वर्ग में प्रथम साध्वी लक्ष्यप्रभा, द्वितीय साध्वी संगीतप्रभा, तृतीय साध्वी स्वस्तिकप्रभा, साध्वी सीनियर वर्ग में प्रथम साध्वी मुदितय-ाा, द्वितीय साघ्वी सहजय-ाा व तृतीय साघ्वी ऋजुय-ाा रही। गीत लेखन प्रतियोगिता के मुनि जूनियर वर्ग प्रथम मुनि भव्यकुमार, द्वितीय मुनि गौरवकुमार, तृतीय मुनि महावीरकुमार तथा मुनि सीनियर वर्ग में प्रथम मुनि कुमारश्रमण, द्वितीय मुनि देवेन्द्रकुमार तथा तृतीय धर्मचंद पीयूश रहे। साध्वी सीनियर वर्ग में प्रथम साध्वी सुमतिप्रभा, द्वितीय साध्वी :ाुधाप्रभा, तृतीय साध्वी जिनय-ाा तथा साध्वी सीनियर वर्ग में प्रथम साध्वी सिद्धप्रज्ञा, साध्वी चांदकुमारी, द्वितीय साध्वी ऋजुय-ाा, साध्वी मधुस्मिता तथा तृतीय साध्वी मधुलता रही। गीत प्रतियोगिता में निर्णायक का दायित्व मुनि विजयकुमार, मुनि दिने-ाकुमार, साध्वी :ाारदाश्री, साध्वी संगीतप्रभा तथा निबंध में निर्णायक मुनि कुमारश्रमण व मुनि हिमां-ाुकुमार ने अपने दायित्व का निर्वाह किया।

नोटः इस समाचार के फोटो आरकेबी 3006, 3057, 2983 तथा 3135 के नाम से है। यह रात का कार्यक्रम था। इसे अलग से ही स्थान दिलाने का प्रयास करावें।

बालकों में पुश्ट हो सदाचार के संस्कार

आमेट में अमृत महोत्सव के अन्तर्गत लघु नाटिका का आयोजन, ज्ञान-ाला के माध्यम से दी गई मनमोहक प्रस्तुति

आमेटः 18 जनवरी

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने बालकों में सदाचार के संस्कार पुश्ट करने की आव-यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि उनमें ज्ञान और सदाचार दोनों का विकास किया जाना चाहिए।

आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां अहिंसा समवसरण में अमृत महोत्सव के अन्तर्गत मंगलवार रात को आमेट ज्ञान-ाला की ओर से प्रस्तुत की गई लघु नाटिका के उपरांत बालकों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि ज्ञान-ाला के बच्चे विद्या का अध्ययन करें। तेरापंथ के संदर्भ में जानकारियां प्राप्त कर उन्हें याद करने का प्रयास करें। प्रि-िक्षिकाएं अपनी -ाक्ति का नियोजन विद्यार्थियों के विकास करती रहे। इससे पूर्व ज्ञान-ाला के बच्चों ने मेरे आचार्य श्रमण भगवान विशयक लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। इसमें बच्चों ने तेरापंथ के ग्यारहवें अधि-ास्ता आचार्चश्री महाश्रमण के बाल्यावस्था से लेकर उनकी दीक्षा तक के प्रसंगों की प्रस्तुति दी। इस दौरान बच्चों ने उनकी :ालीनता, सरलता, सहजता, वैराग्यता, करुणा, हठधर्मिता, धैर्य, धर्म के प्रति संस्कार को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में आचार्यश्री के बचपन का रोल भव्य छाजेड, बच्चे का वैभव पितलिया, मां का रोल भावना लोढा, पिता इंन्द्रजीत चूण्डावत, बडे भाई सुजान का रोल दिव्यां-ा बाफना, मुनि सुमेरमल का रोल अंकित दुगड ने निभाया। कार्यक्रम की प्रस्तुति में मुनि हिमां-ुकुमार, मुनि उदितकुमार की प्रेरणा रही। इस दौरान ज्ञान-ाला प्रि-िक्षिका मनीशा छाजेड, सुमिता चोरडिया, सज्जन मेहता, स्वीटी दक, प्रिया हिंगड, युवक परिशद के संतोश भण्डारी का सहयोग रहा। आवाज की रिकॉडिंग राखी आर्या, नमन ने की।

इसका फोटो है

आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चल चिकित्सालय देश को समर्पित

आमेटः राष्ट्रसंत आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्वावधान में आमजन को निःशुल्क चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से भामाशाह सोहनलाल मेघराज अजीत हार्दिक धाकड़, शिशोदा मुम्बई द्वारा पैथोलॉजी, डेन्टल, ई.सी.जी., एक्स-रे, पी.एफ. टी., वेन्टीलेटर, आई, ऑक्सीजन सहित विभिन्न आधुनिक तकनीकी सुविधाओं से लैस ए.टी.एम. वैन आचार्य महाश्रमण के पावन सान्निध्य में देश को समर्पित की गई। समारोह को संबोधित करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारवें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने धाकड़ परिवार की सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि देश के बिगड़ते स्वास्थ्य के ग्राफ को ध्यान में रखते हुए तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के माध्यम से इस चिकित्सा सुविधा का उपयोग सही दिशा में हो, यही इसकी सार्थकता है। समारोह में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेन्द्र श्यामसुखा ने फोरम के प्रोजेक्ट्स व गतिविधियों की जानकारी देते हुए ए.टी.एम. वैन के प्रयोजक धाकड़ परिवार, धर्मचंद सुराणा, सलील लोढ़ा एवं चल चिकित्सालय में वरिष्ठ फिजिशियन डॉ. दिलीप, फिजिशियन डॉ. सचिन, फिजिशियन डॉ. तौसीफ, लैब टेक्निशियन एन. खान एवं वैन व्यवस्था के लिए उपलब्ध 10 प्रायोजकों एवं कार्यकर्ताओं का आभार ज्ञापित किया। वैन प्रायोजक मेघराज धाकड़ इस अवसर को सौभाग्यपूर्ण बताया। वर्किंग कमेटी सदस्य नवीन चौरड़िया ने अतिथि परिचय व वैन की परिकल्पना से निर्माण तक की यात्रा की जानकारी दी। सुराणा सेठिया अस्पताल के डॉ. प्रिन्स सुराणा ने ए.टी. एम. वैन में उपलब्ध सुविधाओं की विस्तृत जानकारी दी। फोरम के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सलील लोढ़ा ने अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में निर्मित चल चिकित्सालय से आमजन को होने वाले लाभ की जानकारी दी। लोढ़ा ने बताया कि इससे पूर्व फोरम के प्रभारी मुनि रजनीशकुमार के उपस्थिति में आयोजित गोष्ठी में विभिन्न तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के विषयों पर विचार विमर्श व निर्णय लिए गए।